SEMESTER – IV

(Development of Indian Theater)

EC – 02

CONTEMPORARY INDIA

(2019 - 2021)

E-Content 05

- Unit – II : Topic

  A. **औपनिवेशिक एवं आधुनिक रंगमंच**

Vetted by :

प्रो0 (डॉ0) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9835463960

डॉ0 विद्यानंद विधाता

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9472084115

औपनिवेशिक एवं आधुनिक रंगमंच

उड़िया नाटक और रंगमंच – उड़िया नाटक और रंगमंच रमाशंकर राय (1860 ई0 – 1910 ई0) के नाटकों से प्रारंभ हुआ। मनोरंजन दास द्वारा रचित अरण्य फसल, वनहे सी, श्वेतपद्या, काठ का घोड़ा, जगन्नाथ प्रसाद दास का सूर्यास्त, सबसे नीचे का आदमी, असंगत नाटक, सुन्दरदास, बसंत कुमार महापात्र द्वारा रचित श्रृंगार शतक, विजयमिश्र द्वारा रचित तट निरंजना तथा गोपाल डे आदि ने उड़िया रंगमंच को उन्नति प्रदान की।

अभिजात्य रंगमंच – आधुनिक रंगमंच के प्रारंभ होने के पश्चात् भारतीय रंगमंच का विकास विभिन्न दिशाओं में हुआ। जो रंगमंच निम्न मध्यम वर्ग के दर्शकों के बीच विकसित हुआ उसे पारसी रंगमंच कहा गया। ग्रामीण दर्शकों में परंपरागत लोकनाट्य शैली जैसे रामलीला, रासलीला, नौटंकी, कठपुतली, यक्षगान, जात्रा स्वांग आदि ही प्रचलित रही थी, परंतु समय के साथ–साथ इसमें भी परिवर्तन आया और इसमें आधुनिकता का तत्त्व प्रकट होने लगा।

अंग्रेजों के आगमन के पश्चात अंग्रेजी शिक्षा के कारण शिक्षित समुदायों के द्वारा अंग्रेजी नाटकों को पढ़ा जाने लगा तथा अंग्रेजों तथा स्थापित थियेटर को देखने का अवसर भी मिला। इस वर्ग को न तो पारसी थियेटर और न हीं अंग्रेजी थियेटर से संतोष था। अतः इसी वर्ग ने उस थियेटर की नींव डाली जिसे हम अभिजात्य रंगमंच कहते हैं। इसका प्रारंभ कलकत्ता से हुआ। लेवदेफ ने 1765 ई0 में बंगाली थियेटर, 1831 ई0 में प्रसन्न टैगोर ने हिंदू थियेटर की स्थापना की जिसमें शेक्सपियर के

अंग्रेजी नाटक और संस्कृत नाटकों के अंग्रेजी रूपांतरण प्रस्तुत किए गए। सन् 1883 ई0 में नवीनचन्द्र बसु ने कलकत्ता में अपने घर में थियेटर खोला। सन् 1835 ई0 में इस थियेटर में विद्या सुन्दरी नाटक खेला गया जो बहुत सफल रहा। प्रारंभिक नाटकों में स्त्री चरित्र पुरूषों द्वारा ही अभिनीत किए जाते थे। एक अन्य परंपरा भी थी कि रंगमंचित नाटक मुद्रित होकर प्रकाशित नहीं होते थे। सन् 1857 ई0 में बंगला नाटक और रंगमंच के क्षेत्र में नए युग का आरंभ हुआ जब बंगला में पहले से प्रकाशित चार नाटक तीन अलग–अलग थियेटरों में मंचित हुए। माइकेल मधुसूदन दत्त द्वारा रचित शर्मिष्ठा नाटक 1859 ई0 में मंचित हुआ जो अत्यंत उच्चकोटि का था। इन्होंने अनेक हास्य, त्रासदी और प्रहसन लिखे जिसने जनता को रंगमंच की ओर अत्यधिक आकर्षित किया। तत्पश्चात् दीनबंधु मित्र के नाटक नीलदर्पण ने जिसने साम्राज्यवादी शोषण की दर्दनाक कहानी एवं गरीब किसानों के संघर्ष को विषय बनाया, जनता को आंदोलित कर दिया। यह उस नाट्य परंपरा का प्रारंभ था जो बाद में इप्टा द्वारा आंदोलन बनकर सामने आया।

यद्यपि इस प्रकार के थियेटर का प्रारंभ बंगाल में हुआ परंतु धीरे–धीरे यह दूसरी भाषाओं में भी अस्तित्व में आने लगा। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के प्रयत्नों से हिंदी में एक नाट्यमंडली स्थापित हुई जिसमें भारतेन्दु जी ने न केवल नाटक लिखे वरन् अभिनय भी किया। प्रतापनारायण मिश्र ने कानपुर में रंगमंच की स्थापना की। अतः भारत के विभिन्न शहरों में शहरी मध्यमवर्ग की अभिरूचियों को ध्यान में रखकर जो नाटक मंचित हुए उनसे भारतीय रंगमंच की दोनों धाराओं का विकास

हुआ। एक धारा तो अभिजात्य, कलात्मक, प्रयोशील रंगमंच की थी जिसने रंगमंच को एक स्तर प्रदान किया तथा दूसरी तरफ जनोन्मुखी रंगमंच भी विकसित हुआ जिसने भारतीय रंगमंच को सोद्देश्यता प्रदान की। इस प्रकार के नाटकों का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन अथवा धनअर्जन नहीं था।

जनोन्मुखी रंगमंच – सन् 1930 ई0 तक जहॉ एक ओर पारसी रंगमंच की भॉति व्यावसायिक नाटक लोकप्रिय थे, वहीं दूसरी ओर पाश्चात्य शैली के रंगमंच पर पौराणिक एवं ऐतिहासिक विषयवस्तु पर आधारित राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत नाटक ही खेले जाते रहे। भारतेन्दु द्वारा रचित प्रहसन अंधेर नगरी, मधुसूदन दत्त द्वारा रचित प्रहसन बूढ़े शालि के घरे रन, और दीनबंधु मित्र के नीलदर्पण ऐसे नाटक थे जिनमें साम्राज्यवादी, सामंती शोषण और उत्पीड़न के विरूद्ध जनता के संघर्ष को नाटकों का विषय बनाया गया। सन् 1930 ई0 के पश्चात् जब राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष में वामपंथी प्रभाव बढ़ने लगा और किसानों, मजदूरों और विद्यार्थियों के अखिल भारतीय संगठन अस्तित्व में आए तो अभिव्यक्ति साहित्य एवं कला के क्षेत्र में हुई। प्रेमचंद की अध्यक्षता में 1936 ई0 में एक प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई तथा 1943 ई0 में इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन (इप्टा) का प्रथम सम्मेलन हुआ। इप्टा से एक नए तरह के रंगमंच का प्रारम्भ हुआ।

इस रंगमंच द्वारा जनता में अखिल भारतीय आंदोलन प्रारंभ हुआ। इप्टा ने जनता को राष्ट्रीय मुक्ति में भागीदार बनाने, साम्राज्यवाद और फासीवाद के हमले से संस्कृति की रक्षा करने, हर तरह के शोषण और उत्पीड़न से जनता को मुक्ति दिलाने, धार्मिक–सामाजिक रूढ़ियों के

विरूद्ध जागृति पैदा करने तथा मानवीय सौंदर्याभिरूचि का संस्कार जगाने का महानतम् कार्य किया। इप्टा की शाखाएँ 1943 ई0 के पश्चात् संपूर्ण देश में स्थापित हो गईं। इसके द्वारा ऐसे नाटकों को प्रोत्साहन मिला जिसने जनससमयाओं की ओर सभी का ध्यान आकर्षित किया। इप्टा के प्रथम सम्मेलन में मामा वरेरकर, राजाराव, शंभूमित्र, ख्वाजा अहमद अब्बास, मखद्रुम मोहिउद्दीन अली सरकार जाफरी, सज्जाद जहीद आदि लेखकों एवं रंगकर्मियों ने इसमें भाग लिया। बाद में एम. वल्लतोल, हेमंत मुखर्जी, ज्योतिंद्र मित्र, बलराज साहनी, उदयशंकर, पृथ्वी राजकपूर और शांता गॉधी आदि लोग भी इप्टा से जुड़ गए। इप्टा ने न केवल नाटक वरन् गीत, संगीत, नृत्य और फिल्म निर्माण के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

इप्टा ने देश के कोने–कोने में जाकर कार्यक्रम प्रस्तुत किए तथा क्षेत्रीय रंगमंच को भी प्रोत्साहित किया। क्षेत्रीय रंगमंच ने लोकनाट्य शैलियों का प्रयोग नए नाट्य रूपों के विकास के लिए किया। इप्टा ने भारतीय रंगमंच को न केवल जनोन्मुखी बनाया वरन् लोकनाट्य शैलियों की समृद्ध परंपरा को जननाट्य के साथ जोड़कर आधुनिक भारतीय रंगमंच को नवीन स्वरूप प्रदान किया। इप्टा ने वामपंथी और जनवादी आंदोलन के संदेश को जनता के बीच पहुँचाया और राजनीतिक रंगमंच को संभव बनाया।

इप्टा से प्रभावित होकर आंध्र प्रदेश में प्रजा नाट्य मंडली की स्थापना हुई जिसने क्षेत्रीय भाषा में लोकनाट्य शैलियों का प्रयोग कर नाटक प्रस्तुत किया। केरल में पीपुल्स आर्ट्स क्लब मालाबार और उत्तरी

ट्रावनकोर के किसान संगठनों के साथ मिलकर ने नाटक प्रस्तुत किये। भूपेन हजारिका, ज्योति प्रसाद अगवाला ने असम तथा के. पटनायक ने उड़ीसा में इप्टा के साथ जुड़कर कार्य किया। इप्टा ने सिनेमा को भी प्रभावित किया। सन् 1946 ई0 में ख्वाजा अहमद अब्बास के निर्देशन में बनी फिल्म धरती के लाल, इप्टा के सामूहिक प्रयासों का ही नतीजा थी। बलराज साहनी (अभिनेता), रविशंकर (संगीतकार), कृष्णचंदर (उर्दू लेखक), चेतन आनंद (अभिनेता, निदेशक), पृथ्वीराज कपूर (जिनके पृथ्वी थियेटर में प्रस्तुत पठान, किसान आदि नाटक इप्टा की परम्परा के नाटक थे) आदि इप्टा से जुड़े सदस्यों ने सिनेमा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी इप्टा की गतिवधियां जारी रही थीं, परंतु धीरे–धीरे प्रगतिशील लेखक संघ की शिथिलता के कारण इप्टा में शिथिलता आने लगी। यद्यपि इप्टा समाप्तप्रायः हो गया है, परंतु जनरंगमंच की परंपरा समाप्त नहीं हुई है। कुछ समय पश्चात् 1970 ई0 में जनआंदोलन में एक बार पुनः तेजी आई तथा देश के विभिन्न स्थानों पर नाट्य संघों की स्थापना हुई। इन नाट्य संघों द्वारा नाटकों के मंचन की एक नई शैली नुक्कड़ नाटकों का उदय हुआ तथा शैली काफी लोकप्रिय भी हुई। जन नाट्य मंडलियों पर कातिलाना हमले भी हुए। इसके बावजूद देशभर में नुक्कड़ नाटक जगह–जगह पर खेले जा रहे हैं।

संदर्भ– सूची

1. नेमिचन्द्र जैन, व्यवसायी रंगमंच, 1962 मैकमिलन कम्पनी ऑफ इंडिया

2. प्रभाकर माचवे, आज का भारतीय रंगमंच, सितम्बर 1955